

## लोेखन शिक्षण / लिखना सीखाना (Teaching of Writing)

भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं—

उच्चारण

वर्णात्मक (वर्णात्मक के शीर्षक)

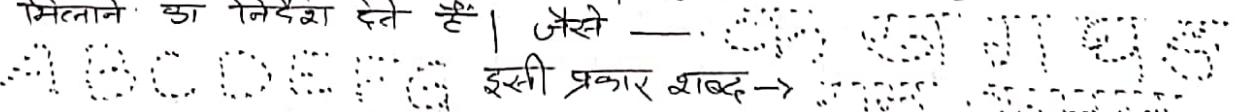
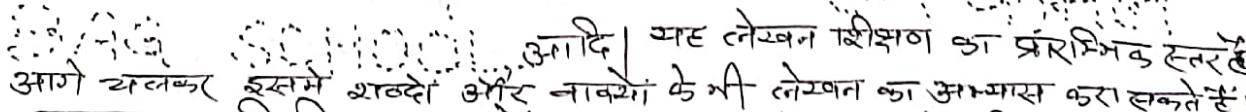
मोर्कित

त्रिपक्षित

भाषा उच्चारणों को उच्चारित्वे (त्रिपक्षि) के माध्यम से जब स्पष्टात्मता प्रदान करते हैं तो इसे आपा का त्रिपक्षित वर्ण अपनी लेखन करते हैं। जब हम अपनी भाषाओं, अनुभूतियों, अवलोकितों आ उपलब्धियों को त्रिपक्षित करते हैं तो उसे ही लेखन कहते हैं। किसी भाषा की त्रिपक्षि का सर्वनाम उस भाषा की अनियों के एवं प्रश्नों (उच्चारित्वे) से होता है।  
लेखन शिक्षण के उद्देश्य

- छात्रों में लेखन के प्रति आभिकाशी बढ़ाना।
- छात्रों द्वारा सुन्दर, स्पष्ट, शुद्ध एवं आकर्षक लेखन की प्रेरणा देना।
- शब्द भंडार में बढ़ि करना।
- वर्तनी के शुद्ध/सही रूप की शिक्षा देना।
- आवश्यकतानुसार मात्रा, विराम आदि चिन्हों के समुचित उपयोग का अभ्यास करना।
- लेखन गति को तेज/प्रवाहशूर्ण बनाना एवं लोेखन शैली का विकास करना।
- सरल, परिसारित, परिष्कृत भाषा के उपयोग में कुशलता बनाना।
- कल्पना, तर्क, निरीक्षण और निर्णय शक्ति का विकास करना।
- आवाभिक्यालि की कुशलता (लेखन करा) विकासित करना।
- लेखन में स्वावलम्बी बनाना।

### लेखन शिक्षण की विधियाँ

- रूपरेखा अनुकरण विधि — यहाँ से ही स्पष्ट है, इसमें छात्रों के सम्मुख अझरों और आगे-चलकर शब्दों की एक कपरेखा बिन्दुओं (.) के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। छात्रों द्वारा इन बिन्दुओं को क्रमाकार मिलाने का निर्देश देते हैं। ऐसे —  इसी प्रकार शब्द → 
- अनुकरण विधि — इसमें माध्यापक छात्रों द्वारा त्रिपक्षित/सुनिश्चित अंक देता है। प्रदत्त शब्द, वाक्यांश, मादि और आकृति हैं तो ~~अंक~~ अंक अकृति के अनुकरण शब्द को पहचानने और उसे लिखने का निर्देश छात्रों को देता है। इससे अध्यार → शब्द → वाक्यों को सुन्दर व शुद्ध लेखन का अभ्यास करने का प्रस्ताव दिया जाता है।

3. माठेसरी विधि — जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह विधि माठेसरी द्वारा आयनाची जानी। लिखना-स्थिकाने की यह मनोविज्ञानिय विधि मानी जाती है। हम प्रायः देखते हैं कि द्वारा में होटे बच्चे के हाथ में भाल नी छोड़ करना, बोन्सील आती है वह उससे गोता, तिरकी, सीधी-दुग्धाकदार लकड़ीरे सीधीने लगते हैं। उनकी इसी ज्ञानात्मक प्रवृत्ति जो ध्यान में रखते हुए पहले विभिन्न प्रकार की रेखाएं और किसी उन रेखाओं के माध्यम से अक्षर लेखन प्रारम्भ करता चाहता है। जैसे—

- पहले सीधी लकड़ीरे — — — — — 111111777777
- तिरकी लकड़ीरे — 1111111111 >>>> <<<<< 11111
- अद्वृ गोलाकार/गोलाकार लकड़ीरे — ))))(((((0000000
- पूर्ण अक्षर — ABCDE, क ख ग घ, अ ब ऊ आदि...

4. जैकटॉट विधि — इसमें हातों द्वारा पढ़े/बोलने हुए वाक्य को अध्याक्ष करने वाले देखकर देखता है। वाक्य एक-एक शब्द और इस प्रकार वाक्य लिखकर अध्याक्ष द्वारा लिखित वाक्य से स्वभाव मिलान करके सदी-गलत की जांच करते हैं। फिर हातों द्वारा लिखा देखे लिखने के कदा जात है। इस प्रक्रिया में हातों को 'अनुकूल एवं स्वभावसंशोधन' की प्रवृत्ति भा विषय करने में सहायता मिलती है।

#### भेखन-शिक्षण-क्रम

1. अनुलेख
2. प्रतिलेख
3. श्रुतलेख या प्राप्ति लेख
4. स्वलेख

#### लिखना सीखने में ध्यान देने कोशल बोते

1. अक्षरों, आजा के शुद्ध रूप की जानकारी.
2. लिखते समय बोलने का तरीका.
3. करना पढ़ने का तरीका
4. अप्पों से आगज की दूरी.
5. सीधी रेखा, अक्षरों की सुडीलता, शिरोरेखा
6. अक्षरों, शब्दों के मध्य समुचित दूरी, अक्षरों की एकता (size)
7. आदर्श नमूने.
8. हातों की ऊनी —> सारल से कठिन का क्रम।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह  
श्रीकाशास्त्र विभाग  
सं.सं.वि.वि. वाराणसी